

शौनकजीने कहा—सूतनन्दन! पुरातन ऋषि एवं यशस्वी ब्राह्मण आस्तीककी इस मनोरम कथाको मैं पूर्णरूपसे सुनना चाहता हूँ ॥ ५ ॥

सौतिरुवाच

इतिहासमिमं विप्राः पुराणं परिचक्षते ॥ ६ ॥

कृष्णद्वैपायनप्रोक्तं नैमिषारण्यवासिषु ।

पूर्वं प्रचोदितः सूतः पिता मे लोमहर्षणः ॥ ७ ॥

शिष्यो व्यासस्य मेधावी ब्राह्मणेष्विदमुक्तवान् ।

तस्मादहमुपश्रुत्य प्रवक्ष्यामि यथातथम् ॥ ८ ॥

उग्रश्रवाजीने कहा—शौनकजी! ब्राह्मणलोग इस इतिहासको बहुत पुराना बताते हैं। पहले मेरे पिता लोमहर्षणजीने, जो व्यासजीके मेधावी शिष्य थे, ऋषियोंके पूछनेपर साक्षात् श्रीकृष्णद्वैपायन (व्यास)-के कहे हुए इस इतिहासका नैमिषारण्यवासी ब्राह्मणोंके समुदायमें वर्णन किया था। उन्हींके मुखसे सुनकर मैं भी इसका यथावत् वर्णन करता हूँ ॥ ६—८ ॥

इदमास्तीकमाख्यानं तुभ्यं शौनक पृच्छते ।

कथयिष्याम्यशेषेण सर्वपापप्रणाशनम् ॥ ९ ॥

शौनकजी! यह आस्तीक मुनिका उपाख्यान सब पापोंका नाश करनेवाला है। आपके पूछनेपर मैं इसका पूरा-पूरा वर्णन कर रहा हूँ ॥ ९ ॥

आस्तीकस्य पिता ह्यासीत् प्रजापतिसमः प्रभुः ।

ब्रह्मचारी यताहारस्तपस्युग्रे रतः सदा ॥ १० ॥

आस्तीकके पिता प्रजापतिके समान प्रभावशाली थे। ब्रह्मचारी होनेके साथ ही उन्होंने आहारपर भी संयम कर लिया था। वे सदा उग्र तपस्यामें संलग्न रहते थे ॥ १० ॥

जरत्कारुरिति ख्यात ऊर्ध्वरेता महातपाः ।

यायावराणां प्रवरो धर्मज्ञः संशितव्रतः ॥ ११ ॥

स कदाचिन्महाभागस्तपोबलसमन्वितः ।

चचार पृथिवीं सर्वा यत्रसायंगृहो मुनिः ॥ १२ ॥

उनका नाम था जरत्कारु। वे ऊर्ध्वरेता और महान् ऋषि थे। यायावरोमें^३ उनका स्थान सबसे ऊँचा था। वे धर्मके ज्ञाता थे। एक समय तपोबलसे सम्पन्न उन महाभाग जरत्कारुने यात्रा प्रारम्भ की। वे मुनि-वृत्तिसे रहते हुए जहाँ शाम होती वहीं डेरा डाल देते थे ॥ ११-१२ ॥

तीर्थेषु च समाप्लावं कुर्वन्नटति सर्वशः ।

चरन् दीक्षां महातेजा दुश्चरामकृतात्मभिः ॥ १३ ॥